

अध्याय - 1

शिवपूजन सहाय

आचार्य शिवपूजन सहाय के जन्म 1893 ई० में शाहाबाद (अब बक्सर) जिला के उनवाँस गाँव में भइल रहे। 1912 ई० में मैट्रिक पास कर के शिक्षक के कार्य करे लगलीं। सहित्य के क्षेत्र इहाँ में पत्रकारिता के माध्यम से प्रवेश कइलीं। मुख्य रूप से इहाँ के कहानी आ लेख लिखत रहीं। पत्रकारिता के क्षेत्र में इहाँ के योगदान के भुलावल ना जा सके। आरा में मारवाड़ी सुधार करे मतवाला मंडल के सदस्य, कुछ समय तक माधुरी, गंगा, जागरण आ बालक के साथे-साथे सहित्य के संपादन कइलीं। हिंदी में प्रकाशित रचनन में 'विभूति' (कहानी-संग्रह) आ उपन्यास 'देहाती दुनिया' के अलावे, 'ग्राम-सुधार' आ, 'अन्नपूर्णा के मंदिर से' निबंध-संग्रह प्रकाशित बा। इहाँ के संपूर्ण रचनावली चारखंड में बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से प्रकाशित बा। इहाँ भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण के उपाधि आ भागलपुर विश्वविद्यालय डी०लिट० के मानद उपाधि के अलंकृत कइल गइल एकरा अलावे बाल सहित्य के उनके पुस्तक प्रकाशित बा। इहाँ के निधन सन् 1963 ई० में भइल।

विषय प्रवेश

कुन्दन सिंह: केसर बाई' कहानी देशभक्ति राष्ट्रीय गौरव गाथा के सर्वोत्तम उदाहरण बा। एह कहानी के देवे के उद्देश्य बच्चन के मन में राष्ट्रीय भावना जगावल बा आ साथे-साथे चरित्रो निर्माण पर बल दिहल गइल बा। आज जब हमनी के समाज में संकीर्ण विचार के चलते राष्ट्रीयता के लोप हो रहल बा, तुम 'कुन्दन सिंह: केसर बाई' लोगन के मन में राष्ट्रीय भावना पैदा करी। कसल-कसावल शिल्प, सटीक भाषा पाठक के चेतना के झकझोर के रख देतबा। कहावत आ मुहावरन के प्रयोग से भोजपुरी भाषा के अभिव्यंजना शक्ति के अंदाज हो जाता।

कुन्दन सिंह: केसर बाई

दूनों के उठती जवानी रहे। ओह जवानी पर अइसन चिक्कन पानी रहे कि देखनिहार के आँख बिछिलात चले। गाँव के लोग कहे कि बरम्हा का दुआरे जब सुघराई बँटात रहे तब सबसे पहिले ईहे दूनों बेकती पहुँचले। सचमुच दूनों आप-आपके सुगहर। बिआह का बेर माँड़ों में देखनिहार का धरनिहार लागल रहे।

घर-परिवार में केहू ना रहे। दुइए प्राणी से अँगना घर गहगहाइल बुझाइ। जब एगो बनूक छतियावे त दोसर ओकर तमतमाइल चेहरा निहारि-निहारि मुसुकाए आ भहूँ फरफरावे लागे। एगो जब बँसुरी बजावे बइठे त दोसर कि बरोबर बजइ-बजाइ के गुनगुनाए लागे। एगो जब कसरत करे लागे त दोसर दाँते आन रहता के हुँकारी देत चले। एगो जब खाये बइठे त दोसर बेनिया डोलाइ के सवाद पूछे।

एक दिन आसिन के पूनो का अँजोरिया में अपने अँगना पटिहाटि खटिया पर सुजनी डसाइ के दूनो बतरस के आनन्द लेत रहले कि एही बीच में एगो कहलस हम तोहरा के बहुत पेयार करीला। ई सुनि के दोसरकी बोललि, हमहूँ तोहरा पेयार के दुलार करीला।

“वोह दुलार के हम सिंगार करीला। जब-जब हम तोहरा दुलार के सिंगरले बानी, तोहरा जरूर इयाद होई। माघ के रिमझिम मेघरिया में, फागुन के फगुनहट से मस्ताइल रंगझरिया में, चइत बइसाख के खुब्बे फुलाइल फुलवरिया में, जेठ के करकराइल दुपहरिया में, असाढ़-सावन के उमड़लि बदरिया में, भादो के अधिरतिया अन्हरिया में, कुआर-कातिक के टहाटह अँजोरिया में, अगहन-पूस के कँपकँपात सिसकरिया में जब-जब तूँ हमरा प्यार के दुलार कइलू, हम वोह दुलार के अइसन सिंगार कइलीं कि तोहार आँख मँड़राए लागलि। बाटे इयाद ?”

अतना सुनिके ऊहो तुनुकि तुनुकि के जम्हाई लेवे लागलि। अइसन रंग ढंग देखि के ई कहलस कि हमनी का भगवान के दीहल सब सुख भोगत बानी, बाकी अपना देस के कौनो सेवा अबहीं ले ना संपरल। छत्री का कोखी जनम लेके हमनी का अपना जाति के कौनो गुन दुनियाँ के

ना देखवलीं। हमरा इ स्कूल के साथी सब कहेलनि कि जब से तोहरा बिआह भइल तब से तूँ अइसन मउग हो गइल जे दिन-रति घरे में घुसल रहे ला।

“एह खातिर हम का करीं ? सरकारे आपन करनी निहारीं। पहिले रउरे उसुकाईले, पाछे लागीले देसभक्ति के गीति गाइके अपना साथियन के ओरहन सुनावे। रावा जवन काम करबि तवना में हमरा साथ देबही के परी। रावा झण्डा लेके निकसी त देखीं जे हमहूँ अपने का संगे निकासत बानी कि ना। हमहूँ छत्री के बेटी हई। हमरा नइहर के सखी के मरद अपना संगे हमरा सखिओ के जेहलि में ले गइल बाड़े। रउरे हमरा के जहाँ चाहीं तहाँ ले चलीं। रावा साथे हम आगिओ में कूदवि त तनिको आँच ना लागी। रउरे संगे तरूआरिओं के धार पर पर हँसते-हँसते चलि सकीला। बाकी रउरा बिना हम कतहीं ना जाइ सकीं। पहिले सरकारे अपना के सुधारीं, हम त पिछलगुई हई। मरद के परछाँहीं मेहरारू हवे। मेहरिया के पाछा-पाछा मरदा रसियाइल डोरियाइल फिरी त कवन अभागिन होई जे ओकरा के लुलुआवत रही ?”

“तोहरा बात हम काटत नइखीं, बाकी सभ दोस हमरे नइखे।”-

“अच्छा त बिहान होखे द, हमहीं पहिले तिरंगा झंडा ले के निकसबि।”

“तब त हमरा छाती सिंकन्दरी गज से डेढ़ गज के हो जाई। बात नइखीं बनावत।”

“तोहार बात बनावे से अधिका बात चिकनावें आवेला।”

“अच्छा त काल्हु जब सरकारी चरन चउकठ लाँघी त देखल जाई हमार उमंग-तरंग।”

2.

सम उनइस सौ बेयालिस ईसवी में भोजपुरियो इलाका अइसन अगियाइल रहे कि जेने देखीं तेने उतपाते लउके। कहीं सड़क कटात रहे, कहीं टेसन आ मालगोदाम लुटात रहे, कहीं थाना-डाकखाना फुँकात रहे, कहीं भाला-बरछा-फरसा भँजात रहे, कहीं मल्लू अइसन मुँहवाला टामी लोग के लाटा कुटात रहे, कहीं रेल के लाइन उखड़ात रहे, कहीं कौनो पुलिस-दरोगा ओहारल डोला में लुका के परात रहे, कहीं मकई का खेत में लड़ाई के मोरचा बन्हात रहे, जहाँ सूई न समात रहे तहाँ हेगा समवावल जात रहे, सगरे अन्हाधुन्हिए बुझात रहे।

कुन्दन-केसर के देखा देखी गाँवों के लोग कमर कसले रहसु। सभे ईहे बिनवत मनावत रहे कि गोरन्हि के राज उलटि जाउ। गोरा अफसर लोग जेने-तेने बिललात फिरत रहसु। दूनों के साहस आ उतसाह त काम करते रहे, दूनों के रूप के जादू सबसे बेसी मोहिनी डाले। जेने दूनों के दल चले तेने हंगामा मचि जाइ। दूनों बेकत के बोली सुनला से लोगन के मन ना अघात रहे। जनता पर रूप आ कंठ के टोना अइसन चलल कि अँगरेजी सरकार के माथा टनके लागल। दूनों के नाम वारण्ट कटल। जनता दूनों के पलक-पुतरी अइसन रच्छा करे लगलि। जब थाना-पुलिस के गोटी ना लहलि त फठजी गोरन्हि के तइनाती भइल। तबो गोरा लोग के छक्का छूटि गइल, बाकि दूनों के टोह ना मिलल।

जवना दित्त दूनों अपना घर के असबाब एने-ओने हटावे खातिर गाँवे पहुँचले तवने दिन पीठियाठोक गोरी पहुँचले स। दूनों अपना घर के खलिहाइ के भीतर बतियावत, छतियावत रहलेसनि, तबले गोरा धमकि अइलेस, हल्ला सुनि के दूनों के कान खड़ा हो गइल। कुन्दन कच्छा कसि के बनूक में टोंटा भरे लागले, केसर के मियान से तरुआरि खींचि के कमर में आँचर बान्हि लेलसि। दूनों हूह बरोबर फड़ बाहर निकलले त केवार खुलते गोरा अचकचाई गइलेस। कुन्दन तीनिल रहता, ठावें पटरू कइ देलस आ केसरी दुइ जाना के माथ काटि के दुरूगा-भवानी अइसन छाल लागलि। गोरा लोग के जबले खुले-खुले तबले दूनों के मार-काट से केहू के हाथ काटा के गिरि परल आ केहू के कपार फाटि गइल आ केहू छाती में छेद ले के गिरल कँहरे लागल। अतना छत्रियाँव दिखवला का बाद दूनों खूनी बहादुर खेत रहले। गोली लगला पर केसर घुमरी खात कुन्दन का देह पर जा गिरलि। अतने में गाँव जवार के लोगनि के गोहार, जुटलि, बाकि गोरा आपन पाँचो लास लेके पराइ गइलेस।

कुन्दन-केसर के लोग उठाइ के लोग गंगाजल से नहवावल, चंदन चढ़ावल, फुलमाला से सजावल, अँजुरी फूल बरिसावल, अगरबत्ती-कपूर के आरती देखावल, दूनों के जय जयकार से आकास गुंजावल, गाँवे-गाँव जलूस घुमाइ के दूनों साहसी सहीदन के पूजा करावल आ घरे-घरे देवी लोग लोर ढारि-ढारि अर्घ चढ़ावल। चारू ओर पंचमुखे ईहे सुनाइ जे अइसन मरन भगवान बिरले के देले।

अभ्यास

- (1) 'कुन्दन सिंह: केसर बाई' कवन तरह के कहानी बा ?
- (2) 'कुन्दन सिंह: केसर बाई' कहानी के संबंध कवना विषय से बा ?
- (3) अंग्रेजी सरकार के माथा काहे टनके लागल ?
- (4) स्वतंत्रता संग्राम में कुन्दन सिंह आ केसर बाई के साहस आ उत्साह का अलावे आउर कवन बात के प्रभाव पड़ल ?
- (5) कुन्दन सिंह: केसर बाई दुनो परानी मिल के केतना गोरन के मार के गिरा दिहलन ? कब आ कइसे ?
- (6) नीचे लिखल मुहावरन के अर्थ-
आँखि बिछिलावल - आँखना ठहरल
भहूँ फहरावल - उत्तेजित भइल
माथा ठनकल - खतरा के आभास भइल
छक्का छूटल - परेशान भइल
आगि में कूदल - कठिन काम कइल
बात चिकनावल - बात बनावल, कवनो बात के अरघावल
लाटा कुटाना - तबाह होना
सूई ना समाय तहँवा हेंगु समवावल - कठिन काम भइल
- (7) अपना गाँव-जवार में कुन्दन सिंह केसर बाई जइसन केहु के कहानी सुनले होखीं त ओकरा लिखीं।

शब्द-संपदा

सुघराई	- सुंदरता
गहगहाइल	- भरल-पड़ल
कटकटाइल दुपहरिया	- खूब तेज गर्मी में तपल दुपहर
रसिआइल डोरिआइल	- साथे-साथे लागल
टोमी	- अंगरेजी फौज के सिपाही
गोहम	- लड़ेभिरे बाला लोग के बिटोर
पराई गइल	- भागि गइल
सुजनी	- संयोग
बेनिया	- बेना, पंखा
असवाब	- कीमती सामान, चीझ-बतुस